Gmail econtent Of Arts <econtentofarts@gmail.com>

Realsim theory of International Relation M A (2nd semester)Anjani Kumar Ghosh Political Science

1 message

ANJANI GHOSH <anjanighosh51@gmail.com> Mon, Jul 13, 2020 at 7:27 AM
To: econtentofarts@gmail.com

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत में सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य से अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है। यह एक ऐसा वैचारिक ढांचा प्रदान करने का प्रयास करता है जिससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सके।ओले के अनुसार *अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत रंगीन धूप के चश्में की एक जोड़ी के रूप में कार्य करते हैं, जो उसे पहनने वाले व्यक्ति को केवल मुख्य सिद्धांत के लिए प्रासंगिक घटनाओं को देखने की अनुमति देता है*। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत मुख्यत: दो सिद्धांतों में विभाजित किये जा सकते हैं, "प्रत्यक्षवादी/बुद्धिवादी" जो मुख्यत: राज्य स्तर के विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। और **उत्तर-प्रत्यक्षवादी/चिंतनशील** जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत में उत्तर औपनिवेशिक युग में सुरक्षा, वर्ग, लिंग आदि के विस्तारित अर्थ को शामिल करवाना चाहते हैं।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को सिद्धांत के रूप में मान्यता ई. एच. कार की पुस्तक ("The Twenty Years' Crisis") और हंस मोरगेन्थ (Hans Morgenthau) की पुस्तक ("Politics Among Nations") से मिली।यह माना जाता है की एक विषय के रूप में प्रथम विश्व युद्ध के बाद वेल्स विश्वविद्यालय, ऐबरिस्टविद में अंतरराष्ट्रीय संबंधों के एक चेयर की स्थापना के साथ उभरा है। प्रारंभिक युद्ध के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय शक्ति संतुलन(Balance of Power) पर केंद्रित था, धीरे-धीरे यह सामूहिक सुरक्षा (Collective Security) की एक प्रणाली के साथ प्रतिस्थापित किया जाने लगा। इन विचारकों को बाद में "आदर्शवादी" के रूप में पहचाना गया। आदर्शवादी स्कूल के अग्रणी आलोचक "यथार्थवादी" विश्लेषक ई एच्. करथे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांत में **व्याख्यात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोणों** में भेद तब नजर आता है जब हम अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों को वर्गीकृत करते हैं। व्याख्यात्मक सिद्धांत वे हैं जो सिद्धांत निर्माण के लिए बाहरी दुनिया को सैद्धांतिक दृष्टि से देखते हैं। रचनात्मक सिद्धांत वे हैं जो मानते हैं कि सिद्धांत वास्तव में दुनिया का निर्माण करने में मदद करते हैं।

यथार्थवाद

यथार्थवाद या राजनीतिक यथार्थवाद, अंतरराष्ट्रीय संबंधों के शिक्षण की शुरुआत के बाद से ही अंतरराष्ट्रीय संबंधों का प्रमुख सिद्धांत रहा है। यह सिद्धांत उन प्राचीन परम्परागत दृष्टिकोणों पर भरोसा करने का दावा करता है, जिसमें थूसीडाइड, मैकियावेली और होब्स जैसे लेखक शामिल हैं। प्रारंभिक यथार्थवाद को आदर्शवादी सोच के खिलाफ एक प्रतिक्रिया के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। यथार्थवादियों ने द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप को आदर्शवादी सोच की कमी के एक सबूत के रूप में देखा था। आधुनिक यथार्थवादी विचारों में विभिन्न किस्में हैं, हालांकि, इस सिद्धांत के मुख्य सिद्धांतों के रूप में **राज्य नियंत्रण वाद**, **अस्तित्व**और **स्वयं सहायता** को माना जाता है।

- **राज्य नियंत्रण वाद/सांख्यबाद** -यथार्थवादियों का मानना है कि राष्ट्र राज्य (Nation States) अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मुख्य अभिनेता होते हैं, इस प्रकार यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक राज्य केंद्रित (State Centric)

सिद्धांत है। यह विचार उदार (Liberal) अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों के साथ विरोधाभास प्रकट करता है, जो गैर राज्य अभिनेताओं (Non-state Actors) और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका को भी अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों में समायोजित करता है।

- **जीवन रक्षा ,अस्तित्व -**यथार्थवादियों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय प्रणाली अराजकता के द्वारा संचालित है, जिसका अर्थ है कि वहाँ कोई केंद्रीय सत्ता नहीं है, जो राष्ट्र राज्यों में सामंजस्य रख सके। इसलिए, अंतरराष्ट्रीय राजनीति स्वार्थी राज्यों के बीच सत्ता के लिए एक संघर्ष है।
- **स्वयं सहायता -**: यथार्थवादियों का मानना है कि राज्य के अस्तित्व की गारंटी के लिए अन्य राज्यों की मदद पर भरोसा नहीं किया जा सकता है, इसलिए राज्य को अपनी सुरक्षा स्वयं के बल पर ही करनी चाहिए।

यथार्थवाद में कई महत्त्वपूर्ण मान्यताएं हैं। यथार्थवादी मानते हैं कि राष्ट्र - राज्य इस अराजक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में ऐकिक (Unitary) व भौगोलिक आधारित अभिनेता (Actors) हैं, जहाँ कोई भी वास्तविक आधिकारिक विश्व सरकार के रूप में मौजूद नहीं है जो इन राष्ट्र- राज्यों के बीच अन्तः क्रिया या सहभागिताओं को विनियमित करने में सक्षम हो। दूसरे, यह अंतरसरकारी संगठनों (IGOs), अंतरराष्ट्रीय संगठनों (IOs), गैर सरकारी सन्गठन(NGOs), या बहुराष्ट्रीय कम्पनियों(MNCs) के बजाय सम्प्रभु राज्यो (Sovereign states) को ही अंतरराष्ट्रीय मामलों में प्राथमिक अभिनेता मानते हैं। इस प्रकार, राज्य ही, सर्वोच्च व्यवस्था के रूप में, एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में रहते हैं। ऐसे में, एक राज्य अपने अस्तित्व को बनाए रखने, अपनी खुद की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए और इन प्राथमिक उद्देश्यों के साथ अपने स्वयं के स्वार्थ की खोज में एक तर्कसंगत स्वायत्त अभिनेता के रूप में कार्य करता है और इस तरह अपनी सम्प्रभुता और अस्तित्व की रक्षा करने का प्रयास करता है। यथार्थवादी मानते हैं कि राष्ट्र राज्य अपने हितों की खोज में, अपने लिए संसाधनों को एकत्र करने का प्रयास है और ये राज्यों के बीच के संबंधों को सत्ता के अपने संबंधित स्तरों द्वारा निर्धारित करते हैं। शक्ति का यह स्तर राज्य के सैन्य, आर्थिक और राजनीतिक क्षमताओं से निर्धारित होता है।

मानव स्वभाव यथार्थवादीयों (*Human nature realists*) का मानना है, कि राज्य स्वाभाविक रूप से ही आक्रामक होते हैं अतः क्षेत्रीय विस्तार को शक्तियों का विरोध करके ही असीमाबद्ध किया गया है। जबकि दुसरे **आक्रामक/ रक्षात्मक यथार्थवादीयों** का मानना है कि राज्य हमेंशा अपने अस्तित्व की सुरक्षा और निरंतरता की चिंता से ग्रस्त रहते हैं। रक्षात्मक दृष्टिकोण एक दुविधा(Security dilemma) की तरफ ले जाता है, क्योंकि जहां एक राष्ट्र खुद की सुरक्षा को बढ़ाने के लिए हथियार बनता है, तो वहीं प्रतिद्वंद्वी भी साथ ही साथ समानांतर लाभ प्राप्त करने की कोशिश करता है। इसलिए यह प्रक्रिया और अधिक अस्थिरता की ओर ले जा सकती है यहाँ सुरक्षा को केवल **शून्य राशि खेल** के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ केवल सापेक्ष लाभ मिल सकता है।

नव यथार्थवाद

नव यथार्थवाद या संरचनात्मक यथार्थवाद, केनेथ वाल्ट्ज द्वारा अपनी पुस्तक *अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धन्त*

में इसे यथार्थवाद के ही उन्नत विकास के रूप में प्रस्तुत किया था। जोसेफ ग्रिएको ने नवयथार्थवादी विचारों को और अधिक परंपरागत यथार्थवादियों के साथ जोड़ा है। सिद्धांत का यह प्रकार कभी कभी "आधुनिक यथार्थवाद" भी कहा जाता है। वाल्ट्ज के नव यथार्थवाद का कहना है कि संरचना के प्रभाव को राज्य के व्यवहार को समझाने के रूप में लिया जाना चाहिए। संरचना को दो रूपों में परिभाषित किया गया है, प्रथम-अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का व्यवस्था सिद्धांत, जो की अराजकता लिए हुए है और दूसरा- इकाइयों में क्षमताओं का वितरण। वाल्ट्ज भी

पारंपरिक यथार्थवाद को चुनौति देता है जो की पारंपरिक सैन्य शक्ति पर जोर देता है बजाय राज्य की संयुक्त क्षमताओं के, जो की प्रदर्शनात्मक शक्ति के रूप में होती हैं।